CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

सुरेन्द्र वर्मा का साहित्य एक अनुशीलन

प्रा. पाटील एस. डी., *सिध्दार्थ कला वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय,*
जाफ्राबाद, ता. जाफ्राबाद जि. जालना

Received: 24/02/2018	Edited: 03/03/2018	Accepted: 09/03/2018

सारांश: *आधुनिक काल के हिन्दी साहित्यकारों की परंपरामें सुरेन्द्र वर्मा का नाम आदर से लिया जाता है। उन्होने समाज को जिस रुप में देखा उसी यथार्थ रुप में साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रामाणिक प्रयास किया है। सुरेन्द्र वर्मा एक ऐसे रचनाकार है जो भारतीयता को अपने साहित्य के माध्यमसे जीवंत करते है। वे परिवेश निर्माण की दृष्टि से अव्दितीय है। नाटककार के रुप में प्रतिष्ठित सुरेन्द्र वर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार है। इनकी लेखनी साहित्य की अन्य विधाओं में भी सजगतो से चली है। उत्तरशती के उपन्यास साहित्य में इनका उपन्यास मुझे चाँद चाहिए सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानी जाती है। इसी कारण इनके साहित्य को जानने की जिज्ञासा मेरे मन मे जागृत हुई।*

बीज-शब्द: *सुरेन्द्र वर्मा, भारतीय साहित्य.*

सुरेन्द्र वर्मा जी का जन्म ७ सितंबर १९४२ में झाँसी में हुआ था। उनकी ख्याति प्रतिभा संपन्न रचनाकार के रुप में है। प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय इतिहास से प्रभावित होकर इतिहास की स्वर्णिम छवियो में घुमना उन्हे अच्छा लगता है। वे अपने नाटको की वस्तु इतिहास से ग्रहण करते है, और बात समकालीन करते है। वर्मा जी रंगमंच एवं फिल्म क्षेत्र से सक्रियता से जुडे होने के कारण इनमें विशेष दिलचस्पी है। वर्माजी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में एक समर्थ नाटककार उपन्यासकार कहानीकार, व्यंग्यकार, समीक्षक, पत्रकार आदि के रुप में उभरकर सामने आये है।

विषय चयन का महत्व:

सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य के विषय में बात करें तो कह सकते है कि वे हिन्दी साहित्य में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आये साहित्यकारो में महत्वपुर्ण स्थान रखते है। सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य का अनुशीलन इस विषय का चयन इसलिए किया है कि उनके व्दारा लिखित साहित्य वर्तमान युग के तनावपुर्ण जीवन मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक विषमता, पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव, स्त्री पुरुष संबंधो में आई नई समस्याएँ चेतनाएँ , नैतिकता का अध:पतन, परंपरागत सनातन मूल्यों के प्रति विद्रोह आदि कई समस्याओ का चित्रण उनके साहित्य में मिलता है। उन्होने साहित्य की विभिन्न विधाओ में अपनी कलम सशक्तता के साथ चलाई है।

शोध आलेख का उददेश्य:

सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य से प्रतित होता है कि वे आधुनिक विचारोंसे प्रभावित है । उन्होंने अपने साहित्य के व्दारा वर्तमान युग की भोगवादी संस्कृति का पर्दाफाश किया है। स्त्री पुरुष के बदलते रिश्ते एवं उन्हे नये दृष्टिकोन से पाठको के सामने लाना, आज की आधुनिक युग की यात्रिक प्रगति, पश्चिमी देशो से बढा यातायात एवं संपर्क उनका चित्रण सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य में कैसे हुआ है उसका शोध करनेका प्रयास रहा है। आज के बुध्दिवादी वैज्ञानिक युग में नई पीढी भोग विलास में लिप्त है। सुरेन्द्र वर्माजीने पारिवारिक टुटन, विघटन अनास्था, अशांति ऐसी कई सामाजिक समस्याओ को अपने साहित्य मे चित्रित किया है।

सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों का अनुशीलन:

सुरेन्द्र वर्मा के प्रतिष्ठित उपन्यासों में घ्अंधेरे से परेङ उनका पहला उपन्यास है। परंतु पहला विशेषण के बावजुद यह एक अत्यंत सशक्त उपन्यास है। यह एक समर्थ रचनाकार की रचना है। यह उपन्यास १९८० मे लिखा गया है। स्पर्धा के युग में तनावपूर्ण संघर्षमय जीवन ने मनुष्य के आपसी रिश्तो को भी खासा प्रभावित किया है। उपन्यास का मुख्यपात्र गुलशन निराशा में डुबा है उसे हर दिशा में अंधकार प्रतीत होता है। गुलशनके उसी के ऑफिस में कार्यरत मधु के साथ मधुर संबंध स्थापित होते है। हालाकी मधु विवाहित है परंतू फिर भी वह गुलशन के साथ शारीरिक सेंबंध स्थापित करती है, जिस में मधु गुलशन को अधिक समय नही दे पाती जिससे वह नाराज हो जाता है किंतु मधु का जवाब है कि वह विवाहिता है उसका घर है, पति है, बच्चे है। जब सहुलियत होगी तब ही वह मिलेगी। इस उपन्यास में वर्माजीने कई पहलुओ पर प्रकाश डाला है।

मुझे चाँद चाहिए (१९९३):

यह उपन्यास अंतिम दशक का सशक्त एवं बहुचर्चित उपन्यास है । जिसके लिए सुरेन्द्र वर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया अपार लोकप्रियताके साथ सुरेन्द्र वर्मा ने हिन्दी उपन्यास - संसार में अपनी क्लासिक व क्रांतिकारी उपस्थिती दर्ज करायी थी । इस उपन्यास का मुख्यपात्र सिलबिल ऊर्फ वर्षा वशिष्ट है यह मध्यवर्गीय परिवार की संघर्षमय गाथा है । शाहजहाँ पुर के किशनदास शर्मा प्राथमिक स्कूल मे संस्कृत के अध्यापक है उनकी बेटी यशोदा शर्मा

(सिलबिल ऊर्फ वर्षा वशिष्ट) की यह संघर्ष गाथा है । वर्षा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा दिल्ली में दाखिल होती है। साक्षात्कार लेनेवाले एक निर्देशक वर्षा के बारे में टिप्पणी करते है और वर्षा के अभिनय की सराहना होती है । अभिनय के इस सफर में वह अनेक अनुभूतियो से गुजरती है। मूलत: उपन्यास में कलाकार के संघर्षमय जीवन को विस्तार से चित्रित किया गया है। यह उपन्यास सामाजिक संघर्ष लहुलुहान कलाकार की सूची में बिंधी हुई आत्मा का विलक्षण दस्तावेज है।

दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता - (१९९८):

आज के उपभोक्ता समाज को व्यक्त करने वाला यह उपन्यास है। इस उपन्यास में महानगरीय जीवन की त्रासदी, आर्थिक उपार्जन के लिए दौडता युवावर्ग तथा मुंबई शहर में पनपता अंडरवर्ल्ड और अनैतिक संबंधो को व्यक्त किया है। एकदम नये प्रकार की कथा भूमि को लेकर लिखा गया यह उपन्यास आज के समाज के नंगे सच को उजागर करता है। नील मुंबई जाते वक्त अपने अतीत को याद करता है। वह दिल्ली में डॉ.शर्मा के निर्देशन में आर्कियोलोजी में पी-एचडी करता है। नील अपनी अध्ययन- शिलताके कारण पुरे विश्वविदयालय में छा जाता है।

इस उपन्यास में नील और भोला दोनों ही सुरक्षा एवं समृध्दि का सपना संजोए अवसर और समृध्दि के महानगर मुंबई पहुँचते है। इस उपन्यास में एक पुरुष वेश्या के जीवन के भावात्मक संबंध उसकी रुपयों की भुख, पारिवारिक बिखराव, व्यक्ति का अकेलापन आदि को इस उपन्यास में व्यक्त किया गया है।

इस उपन्यास में सुरेन्द्र वर्मा जीने दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता महानगरीय जीवन की घिनौनी किंतु यथार्थ स्थिति का पर्दाफाश किया है । नीत और भोला दो जिंदा दिल मुंबई गए थे और मुर्दा बनकर रह गए।

काटना शमी के वृक्ष का पदमपंखुरी की धार से (२०११):

इस उपन्यास में ठेंठ गाव से उठकर एक नाटककार कवि का जहरघोंटू संघर्ष से गुजरते हुए आसमान के सितारे छुने का आख्यान है। किंतु इस राह में निराशा की चरम स्थिति - आत्महत्या - दोनो में है। वहाँ मधुकर जुत्शी का शव मंचपर लटका मिला तो यहाँ महत्वाकांक्षा तिलांजलि घाट ही है। जहाँ से कवि किलंक का शव निकालकर रखा गया है। कला के माध्यम से मूल्यो के प्रति अटूट निष्ठा व समर्पण दोनो में है। इसमें (सिनेमा) कला के व्यवसायी थे तो यहाँ सत्ता के इर्द - गिर्द रहने वाले घुटे हुए सरकारी कुला - वल्चर है।

निष्कर्ष:

कह सकते है कि सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासो में आधुनिक युग की महानगरो की समस्याएँ एवं उस में पिसते मनुष्य के तनावपुर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। सुरेन्द्र वर्मा ने अपने उपन्यासो में सच्चाई को बेबाकी से प्रस्तुत किया है।

कहानीकार के रुप में सुरेन्द्र वर्मा:

सुरेन्द्र वर्मा ने कहानी विधा मे भी अपना योगदान दिया है। उनकी कहानियों को नई कहानी के अंतर्गत मान सकते है। नई कहानी में जो विशेषताएँ दिखाई देती है वे सारी उनकी कहानियों में सरलता से मिल जाती है। उनकी कहानियों में अकेलापन, बदलते पारिवारीक संबंध, स्त्री पुरुष के प्रेम संबंध, नई पुरानी पीढी के बीच का संघर्ष, सामाजिक और मानसिक विसंगतियाँ, कुंठित मनोवृत्तियों को पहचान कर चित्रित किया है।

सुरेन्द्र वर्माजीके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है -

१. कितना सुंदर जोडा (१९८२)
२. प्यार की बाते तथा अन्य कहानियाँ (१९९९)

उनकी कहानियो को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

* पहले विभाग में स्त्री पुरुष के संबंधो को उजागर करनेवाली कहानियॉ दिखाई देती है ।
* दुसरे विभाग के अंतर्गत सामाजिक चेतना को उभारने वाली कहानियों को ले सकते है ।

इनकी कहानियों में समाज के निचले स्तर के लोगों तथा मध्यवर्गीय समाज के लोगों की स्थिति को स्वर देने का प्रयत्न किया गया है। सुरेन्द्र वर्मा ने अपनी कहानियों में प्रत्यक्ष वर्तमान में जो घटित हो रहा है उसका चित्रण किया है । कहानियो में चित्रित यथार्थ पाठक को सोचने के लिए विवश करता है।

उनकी कहानियाँ निम्ननुसार रही है -

१. चेस्टर	२. लेडी किलर
३. मेहमान	४. काऊंटर
५. कितना सुंदर जोडा	६. एक हप्ता
७. डबलबेड	८. सलाहकार
९ पुष्पशैय्या	१०. प्यार की बाते.

उपयुक्त कहानियो को पढने के उपरांत पता चलता है कि सुरेन्द्र वर्माजी एक सफल कहानीकार के रुप में उभरकर पाठकों के सामने आते है।

नाटक विधा में सुरेन्द्र वर्मा का योगदान:

सुरेन्द्र वर्मा नई पीढी के सशक्त नाटककार के रुप में प्रतिष्ठित हुए। इनके नाटकों का कथ्य एवं शिल्प नुतन होने के कारण अधिक चर्चा में रहे इनके नाटको मे रंगमंच का विशेष ध्यान रखा गया है। भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से सुरेन्द्र वर्मा व्दारा लिखित तीन नाटक शीर्षक से नाटय ग्रंथ प्रकाशित हुआ जिसके अंतर्गत सेतुबंध नायक - खलनायक विदुषक एवं द्रौपदी इन तीन नाटकों का समावेश है।

सुरेन्द्रवर्माजी व्दारा लिखित और नाटक है -

सुर्य की अंतिम किरण से सुर्य की पहली किरण तक, आठवाँ सर्ग, छोटे सैयद बडे सैयद, एक दूनी एक, शकुंतला की अंगुठी और कैद ए हयात नाटक प्रकाशित हो चुके है।

नाटकों का संक्षेप में परिचय:

सेतुबंध:

अस्तित्ववादी चिंतन को लेकर चलने वाला यह नाटक अपने आप में अनूठा है। नाटककार ने प्रभावती के चरित्र व्दारा एक ऐसी नारी की कथा कही है जो माँ तो बन सकी किंतु पत्नी नही। साथ में भावना के तौर पर कभी पती प्रेम न पा सकने की वेदना को सुरेन्द्र वर्माजीने इस नाटक में लिखा है।

नायक - खलनायक विदूषक:

इस नाटक में इतिहास के माध्यम से आज के मनुष्य की आकांक्षा तथा नियति के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है । नाटक में व्यक्ति चेतना के साथ - साथ प्रेक्षागृह की दशा मंचीय अनुशासन नि:शुल्क प्रेक्षको की समस्या, अभिनेता अभिनेत्रियों के साज श्रृंगार आदि विषयो पर विचार विमर्श किया गया है।

द्रौपदी:

इस नाटक पर मोहन राकेश के आधे - अधुरे का प्रभाव परिलक्षित होता है - इस नाटक का प्रमुख पात्र मनमोहन एक फर्म अधिकारी है। उसकी पत्नी सुरेखा महाभारत की द्रौपदी की तरह मनमोहन में पाँच - पती के दर्शन करती है। नाटक में मनमोहन के व्यक्तित्व के पाँच पक्षो को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी के प्रयोगवादी नाटको में यह नाटक काफी महत्वपुर्ण है।

सुर्य की अंतीम किरण से सूर्य की पहली किरण तक:

प्रस्तुत नाटक भी इतिहास को आधार बनाकर लिखा गया है। यहाँ इतिहास सम्मत घटना कल्पना के माध्यम से प्रस्तुत की गई है। यह नाटक इतिहास की पृष्ठभूमी में स्त्री पुरुष संबंधो को कलात्मकता से प्रस्तुत करने वाला है। प्रस्तुत नाटक में काम मूल्यों का रुप उसका नग्न चित्र दर्शक पाठक के सामने बडी बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया गया है।

आठवाँ सर्ग:

इस नाटक का आधार कालिदास रचित महाकाव्य कुमार संभवम का आठवाँ सर्ग है। जिसमें राज्याश्रय बनाम लेखक की अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य और शासन के साथ टकराहट जैसे नाजुक मसलों पर प्रकाश डाला गया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत सुरेन्द्र वर्मा का आठवाँ सर्ग जीने की बुनियादी शर्तो को हमारे सामने रखता है। आठवाँ सर्ग स्त्री - पुरुष की मुख्य समस्या को व्यक्त करता है।

छोटे सैयद बडे सैयद:

इस नाटक में काम की कमनीयता की जगह भारत के मध्यमालीन समय को प्रस्तुत किया है। मध्यकाल मे मुगलों का शासन था और उस समय राजकीय षडयंत्रो ने देश के मानस को हिलाकर रख दिया था। उस समय के राजकीय कुचक्रो के माध्यम से आज के राजकीय दावपेचों को व्यक्त कनेवाला यह नाटक है। इस नाटक का कथानक विशद फलक पर उत्तर - मुगलकालीन भारतीय इतिहास के नाजुक मोडों और घटनाओ का दस्तावेज है।

एक दूनी एक:

इस नाटक में दो ही पात्र है, आदमी और औरत इन दो पात्रो के माध्यम से आज के शहरी जीवन तथा उस वातावरण में पैदा हानेवाले स्त्री-पुरुष संबंधो को अभिव्यक्त किया है। इस नाटक मे आज की मशीनी सभ्यता के दबाव के बीच आदमी औरत के नाजुक खतरनाक और विस्फोटक रिश्ते को विवाह संस्था के परिप्रेक्ष्य में कसा, परखा और विश्लेषित किया गया है। सुरेन्द्रवर्मा जीने इस नाटक में नाटकीय एवंम रंगमंचीय दृष्टिकोन से एक अभिनव प्रयोग किया है।

शकुंतला की अँगूठी:

प्रस्तुत नाटक में आज के कलाकारों के माध्यम से वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार जीनेवाले पात्रों की मानसिकता के साथ पौराणिक पध्दति की तुलना की है। इस नाटक में भारतीय नाटयकला की चरम उपलब्धि रुप कालीदास की अमर कृति ध्अभिज्ञान शाकुंतलङ की समकालीन व्याख्या की है। आज के बदलते समय, संस्कृति, विचारो को व्यक्त कर तनावपूर्ण जीवन पध्दति को भी इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष:

कह सहते है कि सुरेन्द्र वर्मा की नाटय-कृतियों मे सामाजिक युग की विसंगतियो को ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भो व्दारा अभिव्यक्ति देने का प्रयास हुआ है। उनके नाटको में आधुनिक युग की भागदौड रिश्ते परिणाम स्वरुप निर्मित समस्याएँ अभिव्यक्ति स्वतंत्रता, घुटन, मानसिक यातनाएँ आदि का सटीक एवं प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है।

सुरेन्द्र वर्माजीका एकांकी साहित्य:

सुरेन्द्र वर्मा सफल नाटककार के साथ साथ सफल एकांकीकार भी है। उनका एकमात्र सशक्त एकांकी संग्रह घ्नींद क्यों रात भर नही आतीङ शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उनकी एकांकियों में मुख्यरुप से मानवीय संबंधो और परिवार के विघटन के साथ दाम्पत्य और स्त्री पुरुष संबंधो को व्यक्त किया गया है। उनकी एकांकियो मे पारिवारीक विघटन स्त्री पुरुष संबंधो के बदलते रुप तथा मूल्यों को विविध कोणो से विश्लेखित किया गया है।

उनके एकांकी संग्रह में छ एकांकिया निम्ननुसार रही है -

१. शनिवार को दो बजे
२. वे नाक से बोलते है
३. हरे घास पर घंटे भर
४. मरणोपरांत
५. नींद क्यों रात भर नही आती
६. हिंडोलइंगुर

निष्कर्ष:

सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि वे आधुनिक विचारों से प्रभावित है। और वर्तमान युग की भोगवादी संस्कृति का वे पर्दाफाश करते है। आधुनिक युग की यांत्रिक प्रगति,

पश्चिम के देशो से बढा संपर्क यातायात एवं संपर्क के अत्याधुनिक साधन के परिणाम स्वरुप विचारों का संस्कृति का आदानप्रदान तेजी से हो रहा है जो हमारे समाज को सोचने पर विवश करता नजर आता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. सुरेन्द्र वर्मा के नाटको मे रंगमंचीयता - देवेंद्रकुमार गुप्ता
२. नींद क्यों रात भर नही आती - सुरेन्द्र वर्मा
३. सुरेन्द्र वर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ.भानुदास रोहित
४. सुरेन्द्र वर्मा और आठवाँ सर्ग - डॉ.अशोक एस पटेल
५. सुरेन्द्र वर्मा व्यक्ति और अभिव्यक्ति - डॉ जिजाबराव पाटील
६. प्यार की बाते तथा अन्य कहानियाँ - सुरेन्द्र वर्मा
७. आधुनिक हिन्दी उपन्यास सृजन और आलोचना - डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर